

पाठ नियोजन

1/2

अष्टम अध्याय पाठ नियोजन

हमने पूर्व में देखा ही है कि अध्यापन का हेतु छात्रों में अच्छे परिवर्तन करना होता है। इस हेतु की पूर्ति के लिये अध्यापन द्वारा सफल नियोजन किया जाना आवश्यक है। अतः प्रत्येक पाठ की योजना बनाई जानी चाहिये।

लिखित पाठ नियोजन के लाभ इस प्रकार हैं :-

- १) इससे अध्यापक को अपने विचारों को गठित करने में सहायता मिलती है।
- २) इससे अध्यापक का आत्मविश्वास बढ़ता है और वह मार्ग-विचलन से बचता है।
- ३) अध्यापन प्रक्रिया और उद्देश्यों को मन में रखने में सहायता मिलती है।
- ४) आवश्यक सामग्री की उपलब्धता पक्की हो जाती है और अन्त समय में पर्याप्त सामग्री को ढूंढने के लिये भागदौड़ तथा तज्जन्य चिन्ता से बच जाते हैं।
- ५) भविष्य की योजनाओं के लिये यह एक सहायता होती है।

अच्छी पाठ योजना के आवश्यक गुण

- १) इसे उपयोग के कुछ समयपूर्व बनाया जाना चाहिये।
- २) यह स्पष्ट और विस्तृत हो।

८१

डॉ. मनोहर लक्ष्मण घोरोटे एवं श्रीमंत कुमार गांगुली, *योगाभ्यासों के अध्यापन विधियाँ*, कैवल्यधाम, लोनावाला पुणे, पृ. 81 वर्ष 2018।

३) वैयक्तिक भिन्नता का विचार ध्यान में रखकर बनी हो ।

४) इसमें निम्न बातें समाविष्ट हों :-

क) पाठ के उद्देश्यों का कथन

ख) क्रियाओं और अनुभवों का क्रमबद्ध कथन

ग) आवश्यक सामग्री की सूची

घ) प्रयुक्त क्रियाविधि का विवरण

च) पूर्व और पश्चात् योजनाओं को जोड़ने का प्रावधान

छ) पाठ के अन्त में अध्यापक द्वारा की गई टीका-टिप्पणी देने का प्रावधान

अध्यापक के लिये जिस किसी विधि को प्रयुक्त किया जाय वह हेतु और अपेक्षित परिणामों से मेल खानेवाली हो, उपलब्ध विधियों में सर्वोत्तम हो एवं सिखाई जाने वाली क्रिया से समायोजित हो । समय, स्थान और सामग्री की दृष्टि से वह सम्भव हो । अध्यापक में किसी विशिष्ट विधि का उचित उपयोग करने की कुशलता होनी चाहिये । छात्रों को विधि का हेतु तथा अनुस्थापन (ORIENTATION) बताया जाना चाहिये ।

यौगिक पाठ का तत्काल उद्देश्य किसी यौगिक अभ्यास की प्रस्तुति और क्रियाविधि है । साथ ही साथ यह भी है कि पाठ में सहभागी छात्रों को अभ्यास का स्पर्श भी हो जिससे उनको भविष्य में करते रहने की प्रेरणा मिले और वे इसका पूरा लाभ उठा सकें । इन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु यह आवश्यक है कि पाठ सुनियोजित और कार्यान्वित हों ।

यौगिक पाठ संचालित करने की दृष्टि से यहाँ कुछ संकेत दिये जाते हैं :-

१) वातावरण का निर्माण - योग का पाठ शान्तिपूर्ण वातावरण में प्रारम्भ होना चाहिये । यह किसी छोटी प्रार्थना या प्रार्थनामयी मनोदशा से प्रारम्भ किया जा सकता है । यथा सम्भव यह किसी ध्यान धारणात्मक आसन में स्थिर होकर किया जाना उचित है । किसी उपयुक्त संरचना में छात्रों को बैठाया जाय । शान्तिपूर्ण